रचना समय

जनवरी - फरवरी
2019

सिमोन द बोवुआ

विशेषांक

सिमोन द बोवुआ
विशेषांक

सम्पादक
हरि भटनागर
बृजनारायण शर्मा

•

सहयोग
अनिल जनविजय
रवि रतलामी
हरजीत
रोली जैन

•

इस अंक का सम्पादन
सुबोध शुक्ल

आवरण पर
सिमोन द बोवुआ

सज्जा
प्रीति भटनागर

मूल्य : 200 रु.

•

ग्राहकीय एवं सम्पादकीय पता :
रचना समय
हरि भटनागर / बृजनारायण शर्मा
197, सेक्टर-बी सर्वधर्म कालोनी, कोलार रोड,
भोपाल - 462042 (मध्यप्रदेश)
मोबा. : 9424418567, 9826244291
E-mail : haribhatnagar@gmail.com

•

शब्द संयोजन एवं मुद्रक :
बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स,
14-बी, सेक्टर-आई, इंडस्ट्रियल एरिया,
गोविंदपुरा, भोपाल : 2587551

•

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए
सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं।
सम्पादक पूर्णत: अवैतनिक।

रचना समय
जनवरी-फरवरी - 2019

यह अंक

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व का प्रसंग है। महात्मा गाँधी जब हरिजनों के मंदिर–प्रवेश के लिए संघर्षरत् थे, मुंशी प्रेमचंद ने उन्हें ख़त लिखकर सुझाव दिया कि मंदिर–प्रवेश मात्र से हरिजनों की स्थिति में बदलाव संभव नहीं, बदलाव तब संभव होगा जब उन्हें आर्थिक रूप से मज़बूत किया जाएगा।

इस प्रसंग की रौशनी में जब मैं स्त्री–स्वातंत्र्य जैसे मुद्दे को देखता हूँ तब यह बात उभरकर आती है कि स्त्री को आर्थिक रूप से मज़बूत कर दिया जाए तो अपनी सभी वर्जनाओं को तोड़कर वह अपना रास्ता ख़ुद तय कर लेगी। फ्रांसीसी दार्शनिक एवं लेखिका सिमोन द बोवुआ का सोच संभवतः इसी मुद्दे के गिर्द रूप लेता है। बहरहाल।

'रचना समय' का ताज़ा अंक सिमोन द बोवुआ के बहुआयामी कृतित्व पर केन्द्रित है। सिमोन का जन्म 9 जनवरी 1908 में पेरिस, फ्रांस में हुआ था। लड़कियों के लिए बने स्कूल, कैथलिक विद्यालय में उनकी शुरुआती शिक्षा हुई। घोर अभावग्रस्तता के बीच सिमोन का बचपन गुज़रा। संभवतः इसी काल ने उन्हें लेखिका होने के लिए प्रेरित किया। तब वह 15 वर्ष की थीं। सिमोन का मानना है कि स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है। स्त्रियोचित गुण उसमें परिवार और समाज द्वारा भरे जाते हैं। यहाँ अवांतर न माना जाए तो हरिशंकर परसाई याद आ रहे हैं जो कहते हैं कि लड़की को जवान पुरुष की निगाहें करती हैं। दर्शनशास्त्र, राजनीति और सामाजिक मुद्दे सिमोन के प्रिय विषय थे। यही वजह थी कि दर्शन के अध्ययन के लिए उन्होंने पेरिस विश्वविद्यालय में दाख़िला लिया जहाँ उनकी भेंट बुद्धिजीवी और मशहूर रचनाकार ज़्याँ पॉल सार्त्र से हुई। सार्त्र से उनका बौद्धिक संबंध आजीवन रहा। बीच में उनका संबंध अमरीकी कवि नेल्सन ऐल्ग्रेन से हुआ किन्तु वह टिकाऊ न रहा। सार्त्र उनके गहरे मित्र थे, मुक्तिबोध के शब्दों में, आत्मा के सहचर। बेहद पढ़ाकू और यात्राओं की भारी शौकीन सिमोन ने 1970 में फ्रांस के स्त्री–मुक्ति आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की। स्त्री अधिकारों सहित अनेक सामाजिक, राजनैतिक मुद्दों पर वे सतत् सक्रिय रहीं। 'द सेकण्ड' पुस्तक से उनकी ख्याति पेरिस की चौहद्दी तोड़कर समूचे विश्व में फैल गई। 14 अप्रैल 1986 में 78 वर्ष की आयु में निमोनिया से उनका निधन हुआ। सिमोन की अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं– द मेंडारिंस, ऑल मेन आर मोर्टल, ऑल सेड एंड डन, द ब्लड ऑफ अदर्स, द कमिंग ऑफ एज, द एथिक्स ऑफ एम्बिगुइटी, सी केम टू स्टे, ए वेरी ईजी डेथ, वेन थिंग्स ऑफ द स्पिरिट कम फर्स्ट, विटनेस टू माइ लाइफ,वूमन डिस्ट्रॉयड।

•

प्रस्तुत अंक में सिमोन के साक्षात्कार, आत्मवृत्तांत, स्मरण, कहानी, पत्र, रेडियो–वार्ता, व्याख्यान और विचार, कह सकते हैं– उनके लेखन के समग्र रूप की झलकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

•

इस अंक का संपादन युवा साथी सुबोध शुक्ल ने किया है। बुंदेलखंड में महोबा ज़िले के एक गाँव में जन्मे सुबोध की समूची शिक्षा इलाहाबाद में हुई। आज़ादी के बाद की हिंदी कविता पर आपने हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शोध किया है। समीक्षाएं, आलेख, वैचारिक विमर्श और अनुवाद पहल, तद्भव, आलोचना, वसुधा और पक्षधर आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। सिमोन के बाद के स्त्री–रचनाकारों के आठ निबंधों के अनुवाद का संकलन आधार प्रकाशन से 'गूंगे इतिहासों की सरहदों पर' शीर्षक से प्रकाशित है। कंसोर्टियम फ़ॉर साउथ एशियन स्टडीज़ (यू एस ए) के अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक–शैक्षणिक प्रकल्पों में हिस्सेदारी करने वाले सुबोध शुक्ल 4 एफ नवाब यूसुफ रोड,सिविल लाइंस, इलाहाबाद में रहते हैं। मो.न. 6392387609.

विशेषांकों की शृंखला में प्रस्तुत अंक आप पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। विश्वास है, पसंद आएगा।

– हरि भटनागर

सम्पादकीय

"राजनीति से परहेज़ खुद एक राजनीति है : सिमोन द बोवुआ"

बीसवीं सदी के अकादमिक भूगोल में, सिमोन द बोवुआ की उपस्थिति, विभिन्न क़िस्म के सांस्कृतिक आवेगों और ज्ञानात्मक जीवन–स्थितियों के संक्रमण के मध्य, जोखिम से भरी परियोजना की तरह रही है। दर्षन के प्रतिक्रियात्मक उपनिवेषों की निरंकुषता के बरक्स तर्क–पद्धतियों के अनुषासनात्मक अतिक्रमण हों या पहचानों के संकुचित नैसर्गिकतावाद के विरुद्ध परंपराओं के अंतर्विरोधों का एक संभावित वैज्ञानिकता में रूपांतरण, सिमोन अनुकूलन से अधिक वैकल्पिकता में यक़ीन करती हैं। वे हर तरह की पूर्वानुमानित नैतिकता और आनुपातिक स्थापनाओं को चुनौती देती हैं। सुविधाजनक हस्तक्षेपों के सत्य से अलग वे न तो किसी संषोधनवादी आश्वस्ति की वकालत करती हैं और न ही किसी विरोधाभासी यथार्थ के साथ खड़ी होती हैं। वे बीसवीं सदी के उन बौद्धिक चेहरों में से एक हैं जिसने विमर्ष को संस्था और संवाद को विरासत में तब्दील किया।

हिंदी का वृहत्तर संसार उन्हें 'द सेकंड सेक्स' की लेखिका के तौर पर जानता है। बीसवीं सदी के बौद्धिक इतिहास में जितना विस्तृत, बहु–अनुषासनात्मक तथा क्षैतिज रचना–संसार सिमोन का है वह दुर्लभ है– जो पत्रों, डायरियों, स्मृति–लेखों, आत्मकथाओं कहानियों और उपन्यासों से लेकर राजनीतिक व्याख्यानों, मनोविज्ञानिक निबंधों और समाजवैज्ञानिक चिंतन तक फैला है। मैं उन्हें मात्र स्त्री–विमर्षकार कहकर किसी एक निश्चित खांचे में रिड्यूस नहीं करूंगा।

यह विषेषांक पूरी तरह से सिमोन के कृतित्व पर आधारित है। हमने चाहा है कि सूचनात्मक या बेहतर होगा कहें परिचयात्मक तौर पर ही सही सिमोन का अधिकांष लेखन आंषिक तौर पर अनुवाद के स्तर पर उपलब्ध हो जिसमें उनके विभिन्न विधाओं पर लिखे–बोले गये विचारों का समन्वय हो। कुछ महत्त्वपूर्ण सामग्री बिलकुल अंतिम वक़्त पर प्रकाषन से जुड़ी अन्य औपचारिकताओं के चलते बाहर करनी पड़ी है। यह हमारे लिए क्षोभ और निराषा का सबब भी है। हम उन सभी अनुवादक साथियों से खेद जताते हैं जिन्हें इस प्रकल्प में शामिल किया गया किन्तु अंत तक इसमें बने नहीं रह सके जबकि उनकी सामग्री बेहद ज़रूरी थी।

साथ रहे न रहे सभी साथियों, वरिष्ठों के प्रति आभार। हरि जी के प्रति विषेष रूप से जिन्होंने मेरी काहिली और बदमिज़ाजी को घर के बुजुर्ग की तरह सहा और संभाला।

शेष आप पर।

सुबोध शुक्ल